राजनीतिशास्त्र (प्रतिष्ठा) बी॰ए॰ तृतीय वर्ष

Abdul Qaish
Assistant Professor
Political Science
Shershah College
VKSU, Sasaram, Bihar

प्लेटो का न्याय संबंधी सिद्धांत

"रिपाब्लिक में राज्य के सिद्धांत की पराकाष्ठा न्याय संबंधी सिद्धांत में है। न्याय वह सूत्र है जो राज्य को बांधे रखता है।" – सेबाइन

प्लेटो के चिंतन में न्याय का सिद्धांत अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसका महत्व इस तथ्य से भी उजागर होता है कि इसका उपशीर्षक (Republic) का Concerning Justice या न्याय मिमांशा या न्याय प्रबंध है। आम तौर पर प्लेटो की पुस्तक 'The Republic' को न्यायशास्त्र के रूप में ख्याति प्राप्त है। प्लेटो ने अपने चिंतन में जिस आदर्श राज्य की रूपरेखा प्रस्तुत की है, न्याय सिद्धांत उसका महत्वपूर्ण आधारस्तंभ है। प्लेटो के चिंतन में आदर्श राज्य की स्थापना हो या इससे संबंधित अन्य सिद्धांत इन सबके बीज प्राचीन यूनान के नगर-राज्य की व्यवस्था में हम देख सकते हैं। प्लेटो के समय में यूनानी नगर-राज्य विभिन्न प्रकार की व्याधियों यथा अक्षमता, अस्थिरता, राजनीतिक स्वार्थपरता, अत्यधिक व्यक्तिवाद से ग्रसित थे। इन व्याधियों से मुक्ति हेतु तथा एक सक्षम, स्थिर, व्यवस्थित एवं आत्म संयमी आदर्श राज्य की स्थापना हेतु वह न्याय सिद्धांत की व्यवस्था करता है।

Republic में न्याय से संबंधित अवधारणा को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है इस संदर्भ में प्रो॰ बार्कर ने कहा है कि "चाहे प्लेटो सोफिस्ट वर्ग की धारणाओं का विरोध कर रहा हो या समाज की विद्यमान व्यवस्था में सुधार हेतु प्रयत्नशील हो, न्याय प्लेटो के विचार का मूलाधार रहा है।"

अपने न्याय सिद्धांत की स्थापना से पूर्व प्लेटो समकालीन न्याय सिद्धांतों का आलोचनात्मक परीक्षण करता है। इनमे प्रचलित सिद्धांत इस प्रकार हैं:-

(1) – न्याय का परंपरावादी सिद्धांत
(2) – न्याय का उग्रवादी सिद्धांत
(3) → न्याय का यथार्थवादी या व्यवहारिक सिद्धांत

Scanned with CamScanner

(क)- न्याय का परंपरावादी सिद्धांत (Traditional Theory of Justice)

इस सिद्धांत के प्रणेता है सोफिस्ट विचारक सिफेलस एवं उसका पुत्र पॉलीमार्क्स। सिफेलस कहता है कि सत्य बोलना तथा मनुष्यों एवं देवताओं के ऋण को चुकाना ही न्याय है, वहीं पॉलीमार्क्स का मानना है कि मित्र के साथ मित्रता एवं शत्रु के साथ शत्रुता का व्यवहार करना ही न्याय है। यह न्याय को एक कला के रूप में प्रकट करता है जिसे मित्रों के हित एवं शत्रुओं के अहित के रूप में पहचाना जा सकता है। प्लेटो विभिन्न आधारों पर इनके द्वारा प्रतिपादित न्याय सिद्धांत की आलोचना या खण्डन प्रस्तुत करता है जो इस प्रकार हैं।

(1)→ न्याय का परंपरावादी सिद्धांत न्याय को एक कला के रूप में स्थापित करता है। अगर यह मान लिया जाए कि न्याय भलाई एवं बुराई करने वाली एक कला है तो यह भी अन्य कलाओं की भांति दो विरोधी कार्य कर सकती है। एक चिकित्सक अपने ज्ञान से रोगी को स्वस्थ कर सकता है वहीं स्वस्थ व्यक्ति को रोगी भी बना सकता है। यह उसकी इच्छा पर निर्भर करता है कि वह अपनी विद्या से हित करता है या अहित। यदि न्याय को भी इस प्रकार की कला मान लिया जाए तो उसका मर्म एवं स्वरूप ही नष्ट हो जाएगा।

(2)→ न्याय का परंपरावादी सिद्धांत इस तथ्य की वकालत करता है कि मित्र का हित एवं शत्रु का अहित करना न्याय है लेकिन वास्तविक जगत में मित्र एवं शत्रु की पहचान करना अत्यंत ही दुष्कर कार्य है।

(3)→ इस सिद्धान्त की यह मान्यता है कि बुरे के साथ बुराई का व्यवहार करना न्याय है। यहाँ तर्क यह है कि किसे बुरे व्यक्ति की स्थिति को और अधिक बुरा बनाना न्याय का उद्देश्य नहीं हो सकता।

(4):→ परंपरावादी सिद्धांतकार यह मानते हैं कि न्याय परिवर्तनशील है। यह देश, काल एवं परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहता है, जबकि सच्चा न्याय अपनी प्रकृति से सार्वदेशिक एवं सार्वकालिक होता है।

उपरोक्त तर्कों एवं विरोधाभासों के आधार पर प्लेटो परंपरावादी सिद्धांत का खण्डन करता है।

Scanned with CamScanner

(b)- न्याय का उग्रवादी सिद्धांत (Radical Theory of Justice)

इस सिद्धांत के प्रणेता हैं थ्रेसीमेकस जो दो मान्यताओं को लेकर चलते हैं (i). न्याय शक्तिशाली का हित है (Justice is the Interest of stronger) (ii) अन्याय, न्याय से उत्कृष्ट होता है (Injustice is better than Justice) पहली मान्यता के अन्तर्गत थ्रेसीमेकस मानता है कि विभिन्न प्रकार की शासन प्रणालिया अपनी स्वार्थ सिद्धि एवं हितों को पूरा करने के लिये विभिन्न प्रकार की विधियों का निर्माण करती हैं। जनता के पास इन विधियों के पालन के अलावा कोई विकल्प नही होता, न पालन करने की स्थिति में दण्ड का प्रावधान होता है। Might is Right का सिद्धांत प्रचलित होता है। दूसरी मान्यता के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति अपना हित चाहता है। ऐसी परिस्थिति में शक्तिशाली व्यक्ति का हित या लाभ न्याय का पर्यायवाची हो जाता है जिससे कि शेष जनता का भला नही हो पाता है। इस स्थिति में अन्यायी व्यक्ति न्यायी व्यक्ति की तुलना में ज्यादा लाभप्रद स्थिति में रहता है।

प्लेटो इन दोनो ही मान्यताओं का खण्डन करते हुए कहता है कि न्याय अपनी सम्पूर्णता में जब प्रकट होता है तब वह किसी वर्ग विशेष के हित साधन का पर्याय न होकर सम्पूर्ण समाज के समेकित लाभ के रूप में फलीभूत होता है। वहीं दूसरी मान्यता का खण्डन करते हुए प्लेटो कहता है कि प्रत्येक वस्तु का अपना एक निश्चित गुण होता है जैसे अग्नि का गुण है जलाना, चाकू का गुण है काटना यदि ये दोनो अपने निश्चित गुण जलाना व काटना का त्याग कर दें तो ये अपनी मूल स्थिति खो देंगे; ठीक उसी प्रकार न्याय आत्मा का उत्तम गुण है और जब यह प्रकट होता है तो आनंदमय एवं फलदायी होता अतः यह कथन उचित नही है कि अन्याय, न्याय से बेहतर होता है।

(c). न्याय का व्यवहारवादी सिद्धांत (Pragmatic Theory of Justice)

इस सिद्धांत के प्रणेता ग्लकॉ (Glaucon) हैं। उनकी मूल मान्यता यह है कि न्याय भय का शिशु है। यह शक्तिशाली लोगों से दुर्बलों की रक्षा हेतु अस्तित्व में आया है। ग्लाकॉ द्वारा प्रतिपादित न्याय की यह

Scanned with CamScanner

जहाँ उसे एक तरफ थॉमस हाब्स के सामाजिक समझौते के निकट खड़ा करती है वहीं दूसरी तरफ न्याय के परंपरावादी सिद्धांत के विपरीत लाती है। न्याय के इन दोनो सिद्धांतों में एक बात सामान्य है कि न्याय एक कृत्रिम वस्तु है जो परिस्थितियों की उपज है, यह कोई नित्य शाश्वत सिद्धांत नही है।

प्लेटो न्याय के व्यवहारवादी सिद्धांत का खण्डन करते हुए कहता है कि न्याय समझौते पर आधारित कोई बाह्य वस्तु नही है। यह किसी कृत्रिम या बाह्य शक्ति द्वारा समाज पर आरोपित कोई व्यवस्था नही है और न ही इसका जन्म भय के कारण हुआ है, यह तो आत्मा का ऐसा नैसर्गिक गुण है जो शक्तिशाली एवं निर्बल दोनो के हित मे है। अतः यह कहना कि "न्याय भय का शिशु है" (Justice is the child of fear) पूरी तरह से गलत है।

Scanned with CamScanner